Nibandha Mala Journal

Certificate of Publication

is awarded to

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

for the paper titled

आचार्य महाप्रज्ञ की कहानियों में जन चेतना की दृष्टि

Published in *Nibandha Mala* Journal Vol-11, Issue-12 December- 2019 ISSN: 2277-2359
International Refereed and Indexed Journal for Research Publication
With Impact Factor 5.1 UGC Care Listed

S.N. Sharma
Editor-in-Chief
editor@hindijournals.org

UGC
University Grants Commission

EDUINDEX

Nibandha Mala *(Bimonthly Hindi Journal)*

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

आचार्य महाप्रज्ञ की कहानियों में जन चेतना की दृष्टि

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी[1], अभिषेक चारण[2]

[1]निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं-341306 (राजस्थान)।
[2]सहायक आचार्य, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं-341306 (राजस्थान)।

आलेख सार

आचार्य महाप्रज्ञजी का सृजनात्मक रचना लेखन जिन परिस्थितियों में आरंभ हुआ उसका उद्देश्य तमाम तरह के विभेदों को मिटाकर समतामूलक समाज की स्थापना करना था। तात्कालिक समाज छूआछूत और ऊंच-नीच जैसी तमाम बुराईयों से ग्रस्त था। इन बुराईयों से मुक्ति हेतु एक जागरूक रचना लेखन एवं सच्चे कहानीकार धर्म की आवश्यकता थी ताकि सामुदायिक संरचना में समूल परिवर्तन लाया जा सके।

महाप्रज्ञजी ने तमाम जैन संतों को साथ लेकरकथा साहित्य के माध्यम से एक स्वर में न केवल खोखले कर्मकाण्डों और धर्म की आड़ में जारी पाखण्डों का विरोध किया अपितु समाज को नई दशा और दिशा दी। अपनी कहानियों में उन्होंने वर्ग भेद और वर्ण भेद की मानसिकता में जकड़े समाज को सौहार्द और सहिष्णुता से परिपूर्ण एक नवीन जीवन दृष्टि दी। एक ऐसी जीवन दृष्टि जिसमेंम्लेच्छ और विधर्मियों तक के लिए अहिंसा एवं सत्कर्म का मार्ग प्रस्तुत किया गया।

कुल मिलाकर महाप्रज्ञजी का समूचा कथा संसार ना केवल भारतीय धर्म और समाज बल्कि समग्र सृष्टि के लिए जनचेतना की दृष्टि लेकर आया। धर्म के नाम पर चली आ रही वर्षों पुरानी भ्रांत धारणाओं के स्थान पर युगानुकूल और तर्क सम्मत अवधारणाओं की स्थापना इनकी महानतम उपलब्धियों में से है।

मुख्य शब्दावली: रूखसार (चेहरा), प्रभावोत्पादक (प्रभाव उत्पन्न करने वाला), गागर में सागर (सीमित शब्दावली में बहुत गहरे भावों की अभिव्यक्ति), चरैवैति-चरैवैति (निरन्तरचलते रहो, चलते रहो), सरसता (रसयुक्त), यथार्थता (वास्तविकता)।

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास की ओर दृष्टिपात करें तो पायेंगे कि इस लम्बीसाहित्यिक परम्परा को विस्तार से व्याख्यायित करने के लिए इतिहास लेखकों ने इसे चार काल खण्डों में सर्वमान्य रूप से विभाजित किया जिन्हें आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिकाल के नामों से जाना गया। इस इतिहास परम्परा के प्रथम विभाजन आदिकाल में ही जैन कवियों की साहित्य परम्परा के दर्शन हो जाते है। आदिकालीन धार्मिक साहित्य में सिद्ध नाथ एवं जैन साहित्य का बोलबाला रहा और इन सब में भी जैन साहित्य को सर्वाधिक प्रामाणिक माना गया है। क्योंकि जैन कवियों की दुर्लभ लेखनी आज भी पुस्तकाकार रूप में सुरक्षित मिलती है। हिन्दी के जाने माने आलोचक डॉ. रामकुमार वर्मा ने तो हिन्दी के पहले कवि के रूप में भी जैन कवि स्वयंभू को स्वीकारा है जिनका समय 643 ई. में ठहरता है। इनके बाद यह परम्परा जैन कवि पुष्पदन्त से होकर आगे बढ़ी। जैन काव्यों का प्रमुख रस शांत रहा है, क्योंकि अहिंसा एवं नैतिकता इनके रक्त संस्कारों का अभिन्न अंग रही है।

आधुनिक युग की 20वीं सदी में भी जिन व्यक्तित्वों ने जैन कवियांे की इस समृद्ध साहित्यिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने का जो महनीय उपक्रम किया है उनमें आचार्य तुलसी एवं उनके महान दार्शनिक शिष्य आचार्य महाप्रज्ञ का विशेष अवदान रहा है।

तेरापंथ धर्मसंघ वर्तमान में एक प्रबुद्ध एवं समृद्ध धर्मसंघ के रूप में प्रतिष्ठित है। एक तरफ जहां अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी के कुशल नैतृत्व में इस धर्मसंघ ने अत्यन्त विकास किया वहीं आचार्य महाप्रज्ञ की प्रेक्षा दृष्टि, व्युत्पन्नमती और आध्यात्मिक व्यक्तित्व से इस धर्मसंघ को आश्चर्यजनक गुणात्मक विस्तार मिला। महाप्रज्ञ की विलक्षण प्रतिभा और जागृत प्रज्ञा का आभास कर प्रसंगवश कभी आचार्यश्री तुलसी ने युवाचार्य महाप्रज्ञ के बारे में यहाँ तक कहा था कि युवाचार्य संघ के लिए उतने ही मान्य और सम्माननीय हैं जितने कि आचार्य हैं। जिसने भी आचार्य महाप्रज्ञ को निकट से देखा उन्हें इस कथन के बारे में किसी प्रमाण की अपेक्षा महसूस नहीं हुई। ऋजुता, सरलता की प्रतिमूर्ति अक्लान्त दार्शनिक विभूति महाप्रज्ञ का नथमलिज्म (महाप्रज्ञवाद) भी गांधीवाद की तरह लोकप्रिय हुआ। प्रदर्शन एवं प्रचार से अछूते, कर्मशील व्यक्तित्व के धनी आचार्य महाप्रज्ञ चरैवेति-चरैवेति में ही विश्वास करते थे।

आचार्य महाप्रज्ञ और कहानी विधा

साहित्य को सदैव समाज का दर्पण कहा जाता रहा है और दर्पण में अपार संभावनाओं को उकेरने का सामर्थ होता है और जब बात साहित्य की विधाओं की हो तो सबसे स्पष्ट रूखसार कहानी विधा को माना जा सकता है क्योकि दर्पण की स्पष्टता दर्पण का मूल्य तय करती है ऐसे मे कहानी विद्यारूपी रूखसार, दर्पण की इस खूबी में चार चांद लगा देता है।

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

यहां कहानी विधा को समाज साहित्य दर्पण का रूखसार कहने का तात्पर्य यह है कि चूंकि शरीर में मौजूद कुल पांच ज्ञानेन्द्रियों में से सर्वाधिक ज्ञानेन्द्रियों का माध्यम रूखसार ही होता है ठीक उसी प्रकार साहित्य की तमाम विधाओं में कहानी विधा ही एक ऐसी विधा है जिसके माध्यम से संसार की समस्त संवेदनाओं और जनचेतनाओं को बखूबी उकेरा जा सकता है इतिहास से लेकर वर्तमान तक लोककथा व दन्त कथाओं की रोचकता के हिचकोले खाती यह मंदधारा वर्तमान में विशालकाय दरिया में तब्दिल हो चुकी है जिसका न कोई आदि है न अंत। भारतीय आजादी आन्दोलन के दौर में जन्मे कहानी सम्राट प्रेमचन्द (1880) ने तो कहानियों के माध्यम से जिस प्रकार जनचेतना को झंकृत किया उसकी खनक वर्तमान पीढ़ियों को भी उसी सुमधुर आवाज में चेतन कर जाती है आजादी के ठीक बाद या कि कहें आजादी के आनंद में गोते लगाते वक्त शायद अधिकांश जनमानस एक बार फिर अपनी जिम्मेदारियों से विमुख और चेतना शून्य हो चला ऐसे में फिर एक प्रेमचन्द सरीखे युगपुरुष का जन्म होता है जो राजस्थान के टमकोर कस्बे में नथमल के रूप में जन्म लेता है तत्पश्चात् जैन मुनि नथमल के रूप में विकसित होता है और यही से शुरू हो जाती है वो प्रकाश यात्रा जिसकी चेतना शून्य समाज को सर्वाधिक आवश्यकता थी उन्होंने न केवल दीक्षा ली बल्कि सच्चे अर्थों में दीक्षित होने के नये आयाम स्थापित किये उन्हांेने महाप्रज्ञ बनने तक के सफर में छोटी-छोटी रूचिकर कथाओं को प्रवचनों का आधार बनाकर समाज को चेतना की पटरी पर लाने में अभूतपूर्व योगदान दिया जिसे किसी भी स्थिति में नकारा नहीं जा सकता उनके द्वारा लिखी इन्हीं कहानियों का बाद में संकलन हुआ। 43 लघुकथाओं का संग्रह है "गागर में सागर' और 'महाप्रज्ञ की कथाएं' (पांच भाग) जिसे मानवीय संवेदनाओं का अनूठा दस्तावेज माना जा सकता है। स्वयं महाप्रज्ञ के अनुसार एक छोटी-सी कहानी उतना बड़ा तत्व समझा देती है जितना हजारों पृष्ठ नहीं समझा पाते । हृदय की मांग है सहजता और सरसता। उसी की पूर्ति के लिए जब मनुष्य ने प्रयत्न किया तब कहानी का जन्म हुआ। महाप्रज्ञ प्रवचनों में सरसता हेतु प्रयुक्त कथाओं को महाप्रज्ञ की कथाएं, इस नाम से पांच खण्डों में विभक्त है।इन्हीं पांच खण्डों में संकलित कहानियों में जन चेतना की यह धारा बेहद समृद्ध सांस्कृतिक धरातल जैन आचार्यों के श्रीमुख से आज भी आचार्य महाप्रज्ञ के उद्देश्य को जनमानस तक पहुंचाती रहती है जोकि वास्तव में जनचेतना की संवाहक है।

महाप्रज्ञजी की कहानियों में जनचेतना की दृष्टि

कथा गद्य साहित्य की एक रोचक विधा है। यह स्थूल या सूक्ष्म कथानक के साथ समाज की किसी एक स्थिति, जीवन की किसी एक समस्या, मनुष्य की किसी एक प्रवृत्ति या उसके चरित्र की किसी एक विशेषता का छोटा-सा चित्र अंकित कर देती है। कथा के माध्यम से बात कहने की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। आचार्य महाप्रज्ञ अपने प्रवचनों में कथाओं का प्रयोग करते रहें, जिससे श्रोता प्रतिपाद्य को सरलता से हृदयंगम कर सके। आचार्य महाप्रज्ञजी की

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

कथाएं आकार में लघुता, संवेदन की तीव्रता, प्रभावान्विता, जीवन में किसी एक सत्य खण्ड की प्रतिष्ठा, रोचकता और सक्रियता आदि अनेक विशेषताएं लिए हुए हंै।

कथाओं में सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना तथा बदलती हुई परिस्थिति से उत्पन्न विश्रृंखलता का समाधान भी प्रस्तुत है।

इनमें कुछ कथाएं काल्पनिक, कुछ ऐतिहासिक तथा कुछ कथाएं हास्यप्रधान भी हैं। कहीं-कहीं एक ही कथा को भिन्न-भिन्न प्रसंगों में भिन्न-भिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया है। उनकी कथाओं की एक सबसे बड़ी विशेषता है कि भाषा कसी हुई है। कहीं भी अनावश्यक विस्तार करके कथानक के तत्व को शिथिल या नीरस नहीं होने दिया है। कथा के माध्यम से दार्शनिक गुत्थियों को सुलझाकर उसका निष्कर्ष निकालने की अद्भुत क्षमता आचार्य महाप्रज्ञजी में थी।

कथा के माध्यम से जो अवबोध उन्हें इष्ट है वह मार्मिक ढंग से प्रस्तुत हुआ है।कथाओं का प्राण है उनका निगम। वह प्राण ही दूसरों को अनुप्राणित करता है और यह महाप्रज्ञकी कथाओं की विशेषता है।

आचार्य महाप्रज्ञ के कथाओं की सात पुस्तकें प्रकाशित है। गागर में सागर, महाप्रज्ञ की कथाएं-गागर के 5 भाग है।

गागर में सागर-इस कृति में छोटी-छोटी कथाओं का समावेश है। ये लघु कथाएं हृदय को छूती है और अध्येता को झकझोर देती है। स्वयं लेखक इस बात को स्वीकार करते है कि जो बात हजारों पृष्ठों में नहीं समझाई जा सकती, जो बात हजार बार कहने से भी ग्राहय नहीं बनती, वही बात एवं छोटी सी छोटी कथा समझा सकती है।

प्रस्तुत कृति में विभिन्न बोधवाक्यों से संबंधित पद कथाएं है। इनके पठन से व्यक्ति आनन्द से आप्लावित हुए बिना नहीं रहता। कथाओं की भाषा अलंकारिक और प्रसादगुण युक्त है।

महाप्रज्ञ की कथाएं-यह पांच भागों में संकलित है। इनमंे कुछ ऐतिहासिक घटनाएं है, कुछ पारम्परिक और कुछ काल्पनिक। कथाएं या घटनाएं इतनी महत्वपूर्ण नहीं होती महत्वपूर्ण होता है उनका प्रतिपाद्य या उनका जीवन्त सत्य, जो कथाकार इस जीवन्त सत्य को शब्दों का उचित परिवेश दे पाता है। वह उनको सर्वाधिक उजागर कर प्रभावोत्पादक बना देता है। जैसे महारानी विक्टोरिया गई, दरवाजा खटखटाया। भीतर था प्रिंस अलबर्ट। उसने पूछा कौन है? वह बोली महारानी विक्टोरिया। दरवाजा खुला नहीं। फिर खटखटाया। फिर पूछा कौन है? उसने कहा आपकी प्रिय पत्नी विक्टोरिया। तत्काल दरवाजा खुल गया। महारानी के लिए दरवाजा नहीं खुल सकता और प्रिया के लिए दरवाजा खुल सकता है। एक का अहंकार दूसरे में भी अहंकार पैदा करता है। एक की विनम्रता दूसरे को भी विनम्र बना देती है।

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

इस प्रकार प्रत्येक कथा छोटे एवं सरस वाक्यों में निबद्ध है जो पाठक का ध्यान खींचती है। आज के व्यस्त मानव के मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन हेतु ये कथाएं अपना विशेष स्थान रखती है।

महाप्रज्ञका एक सच्चा कथाकार रूप

महाप्रज्ञ के अन्यान्य कर्तृत्व में विविध आयामी साहित्यिक लेखन प्रमुख है। वह केवल शब्द संकलन को ही साहित्य नहीं मानते अपितु उनके अनुसार साहित्य वह है, जो जीवन्त समस्या को समाहित करता है। वर्तमान और भविष्य को बांधकर साथ में चलता है तथा प्राणियों में संस्कार और स्फूर्ति भरता है।

विभिन्न साहित्यकारों ने साहित्य की विभिन्न कसौटियां निर्धारित की हैं किन्तु सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि सृष्टि की विविधता, विचित्रता, मनोरमता, व्यवस्थितता, मनमोहकता का अंकन, सत्यं शिवं सुन्दरं का प्रसारण साहित्यकार की कसौटी निर्धारित करती है। साहित्यकारों की जो कसौटियां विद्वानों ने निश्चित की उन पर महाप्रज्ञ का साहित्य खरा उतरता है। व्यक्ति-व्यक्ति का निर्माण और सुखी समाज की संरचना को महाप्रज्ञ कहानी का प्रमुख उद्देश्य मानते हैं। इसके अतिरिक्त व्यक्ति की आभ्यन्तर ज्योति को प्रज्ज्वलित करना, विवेक चेतना और नैतिक चेतना का जागरण करना, मानवीय संवेदना का जागरण करना, मानवीय चेतना में समता और अनुकम्पा की जागृति करना भी वे कहानी का उद्देश्य मानते थे।

महाप्रज्ञ साहित्य को किसी व्यक्ति या वर्ग विशेष तक सीमित नहीं मानते थे उन्होंने जीवन के प्रत्येक घटक को छूने का प्रयास किया और मनुष्य के सर्वांगीण विकास के सभी विषयों पर अपनी लेखनी चलाई। जनता की विभिन्न रुचियों के आधार पर इन्होंने धर्म, अध्यात्म, राजनीति, समाजनीति, विज्ञान, दर्शन, आचार, इतिहास, मनोविज्ञान, योगशिक्षा इत्यादि सभी क्षेत्रों को अपनी लेखनी से समृद्ध किया है। वे युगबोध के साथ चलते थे और वर्तमान को व्याख्यायित कर अनागत की शाश्वत कल्पना करते थे। वे हर तथ्य को विज्ञान की कसौटी पर कसते हैं तथा धर्म के हर पहलू को वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषित करते हैं। अध्यात्म और विज्ञान वर्तमान समय की आवश्यकता है। अतः दोनों का सामंजस्य यथार्थ है। अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय की आवश्यकता विवेकानन्द ने महसूस की थी। आचार्य विनोबा ने भी अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय पर अत्यधिक बल दिया था। महाप्रज्ञ साहित्य में अध्यात्म और विज्ञान का एक साथ प्रतिपादन ही नहीं किन्तु उन्हें एक-दूसरे के पूरक के रूप में भी प्रतिष्ठित किया है। जर्मनी के एक व्यक्ति ने कहा-जैन धर्म में सुपर सोनिक कम्प्यूटर के तत्त्व विद्यमान हैं। उनसे पूछा गया कि आप यह किस आधार पर कह सकते हैं? उनका जवाब था-मैंने महाप्रज्ञ के साहित्य को पढ़ा है। उसके आधार पर यह कह सकता हूँ कि जैन धर्म में कम्प्यूटर के जिस स्वरूप की चर्चा है, विज्ञान अभी भी उससे बहुत दूर है।

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

कथा साहित्य के क्षेत्र में इन्होंने मौलिक सृजन की दिशा में जो कीर्तिमान स्थापित किया, वह किसी भी युग के साहित्यकारों की चेतना को झकझोरने वाला है। किसी भी लेखक की सबसे जीवंत रचना वही होती है, जिसे पढ़ने से ऐसा प्रतीत हो कि लेखक का जीवन इसमें बोल रहा है। महाप्रज्ञ ने अपनी कथा चेतना में जीवन की चेतना का संप्रेषण कर साहित्य जगत् को उपकृत किया है।

निष्कर्ष

महाप्रज्ञ के संपूर्णकथा साहित्य का साक्षात्कार करने के पश्चात् निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि महाप्रज्ञ की कहानियों में सूक्ष्म विषयों को यथार्थता के साथ बेहद सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया एवं उनके कहानी रचना संसार में गंभीर, नैतिक, दार्शनिक एवं सामाजिक सरोकार से संबंधित प्रश्न सदैव उठते रहे और उन सभी प्रश्नों का पूर्णतः समाधान भी उन्हीं के द्वारा ही दिया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि महाप्रज्ञ युगीन, चेतनशील एवं सच्चे कर्मप्रधान पुरुष थे जो कि न केवल स्वयं नैतिकता के रास्ते पर चले अपितु अपनी लघु कथाओं के माध्यम से अपने साथ समूचे देश को एक सूत्र में बांधकर साथ चलाने का अनूठा उपक्रम किया। जिसकी बानगी हेतु निम्नलिखित पंक्तियां प्रस्तुत है-

"न हो मतभेद आपस में, छलावों को हरायें हम
उजाला प्रीत का लेकर नये दीपक जलायें हम।
सितारों सा सदा चमके नगीनों सा सदा दमके
ये अपना देश है इसको चलो मिलकर सजाये हम।।"

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दुलहराज, मुनि (2009) महाप्रज्ञ की कथायें, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. विश्रुतविभा, साध्वी, विमलप्रज्ञा, साध्वी (2007) "महाप्रज्ञ ने कहा", आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. दुलहराज, मुनि (1996) "मेरी दृष्टि मेरी सृष्टि", आदर्श साहित्य संघ, चूरू (राजस्थान)।
4. महाप्रज्ञ, आचार्य (2003) "चिंतन का परिमल", जैन विश्व भारती, लाडनूं।
5. विश्रुतविभा, साध्वी (2013), "महाप्रज्ञ प्रबोध, जैन विश्व भारती, लाडनूं।
6. त्रिपाठी, प्रोफेसर आनन्दप्रकाश (2013), "भारतीय दर्शन को आचार्य महाप्रज्ञजी का योगदान"-युनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर।
7. वर्मा, डॉ. रामकुमार (2010), "हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास"-लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।
8. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र (1929), "हिन्दी साहित्य का इतिहास"-नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

9. त्रिपाठी, आचार्य विश्वनाथ (2012), "हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास"-Orient Blackswan Pvt. Ltd.
10. चतुर्वेदी, रामस्वरुप (1986), "हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास"-लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।
11. गुप्त, डॉ. गणपतिचन्द्र (दसवां संस्करण-2013), "हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास"-लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद।
12. डॉ. नगेन्द्र (1973-2014), "हिन्दी साहित्य का इतिहास" (सम्पादित)-मयूर पेपरबेक्स, जयपुर।
13. द्विवेदी, आचार्य हजारीप्रसाद (2015), "हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास"-राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
14. मिश्र, आचार्य विश्वनाथप्रसाद (2012), "हिन्दी साहित्य का अतीत"-वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
15. शर्मा, डॉ. नलिन विलोचन (1960-97), "हिन्दी साहित्य का दर्शन"-बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना।
16. सिंह, डॉ. बच्चन (1996), "हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास"-राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
17. (1957-84), "हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास"-नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

Copyright©authors